© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 04 | July - September 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Double Blind Peer Reviewed

भारत में डिजिटल राजनीति: प्रौद्योगिकी संचालित राजनीति या राजनीतिक रूप से संचालित प्रौद्योगिकी

Sushma Rani

B.Ed.(G.J.U), M.A(I.G.N.O.U), NET, JRF

bagaria.sushma@gmail.com

सन्दर्भ

यह विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है कि कैसे उभरती प्रौद्योगिकियों ने लोगों के राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित किया है, कैसे प्रौद्योगिकी और राजनीति आंतरिक रूप से परस्पर संबंधित हैं, और उनके परस्पर संबंध के संभावित परिणाम। भारत की विद्युत राजनीति पर प्रौद्योगिकी की भूमिका का मूल्यांकन करें और आने वाले दिनों में प्रौद्योगिकी किस प्रकार की भूमिका निभाने जा रही है। इसके अलावा, यह बताता है कि विभिन्न राजनीतिक दलों, राजनीतिक नेताओं द्वारा अपने राजनीतिक अंत को अधिकतम करने और परिणामों को प्रभावित करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कैसे किया जाता है। राजनीतिक और कानूनी बाधाओं के चलते भारत वैज्ञानिक परियोजनाओं और अनुसंधान के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति नहीं कर पा रहा है दुनिया भर की राज्यसत्ताओं पर फ्रंटियर टेक्नोलॉजी के प्रभावों के आकलन के बाद इनके परिवर्तनकारी स्वरूप का पता चला है. राज्यसत्ताएं फ्रंटियर टेक्नोलॉजी के एकीकृत ढांचे की तलाश में हैं. टेक्नोलॉजी मौजूदा भू-राजनीति के केंद्र में है. यही वैश्विक गठजोड़ों को आकार दे रही है और विश्व स्तरीय जुड़ावों की रूपरेखा तैयार कर रही है. ख़ासतौर से फ्रंटियर प्रौद्योगिकी बेहद तेज़ रफ़्तार से चौथी औद्योगिक क्रांति का आग़ाज़ सुनिश्चित कर रही है.

कुंजी शब्द: प्रौद्योगिकी, राजनीति, डिजिटलीकरण, सोशल मीडिया, राजनीतिक व्यवहार, चुनावी राजनीति

परिचय

तकनीकी नवाचारों का हमारे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन पर अबोधगम्य प्रभाव पड़ रहा है, जिसमें सूचना तक पहुंच, सामाजिक आंदोलनों का निर्माण, राजनीतिक आंदोलनों को उत्प्रेरित करना और हम जिस तरह से बातचीत करते हैं, शामिल हैं। यह कहना सर्वव्यापी हो गया है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी हमारे समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये वैज्ञानिक और तकनीकी कलाकृतियाँ हमारे जीवन के रास्ते में ब्लॉक बना रही हैं। हमारा आधुनिक जीवन प्रौद्योगिकियों से भरा हुआ है। हालांकि इसके परिणाम पैमाने और महत्व में उल्लेखनीय हैं, लेकिन इसके राजनीतिक प्रभाव विवादित हैं, और इसके दीर्घकालिक प्रभाव अज्ञात हैं। प्रौद्योगिकी को अक्सर आर्थिक विकास, सांस्कृतिक रचनात्मकता की प्रेरणा, सरकार के आवश्यक उपकरण और सुरक्षा की आधारशिला के रूप में स्वीकार

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 04 | July - September 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Double Blind Peer Reviewed

किया जाता है। तकनीक ने लोगों के जीने, काम करने और खेलने के तरीके को बदल दिया है। हालाँकि, यह कोई नई घटना नहीं है क्योंकि प्रौद्योगिकी ने पूरे इतिहास में कई तरह से सभ्यता को बदल दिया है। पिछले वर्षों में, हमारे पास समाज में तकनीकी प्रगति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था जो समाज के सभी पहलुओं के इर्द-गिर्द घूमता है। इतिहास सदियों से चली आ रही औद्योगिक क्रांति का गवाह रहा है। भाप की ताकत से शुरू हुई पहली क्रांति ने यह साबित कर दिया कि जनशक्ति ही प्रगति का एकमात्र रास्ता नहीं है; मशीनों और मांसपेशियों के जुड़ने से मानवीय प्रयास कम हो गए। दूसरी औद्योगिक क्रांति ने दुनिया को बिजली की शक्ति से करीब ला दिया। प्रौद्योगिकी में छलांग ने जीवन के नए तरीकों और वैश्विक अर्थव्यवस्था को जन्म दिया। फिर कंप्यूटर ने सब कुछ बदल दिया। सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स ने तीसरी औद्योगिक क्रांति का नेतृत्व किया, कार्य स्थान स्मार्ट हो गया, प्रौद्योगिकी व्यक्तिगत हो गई और संचार मोबाइल हो गया। चौथी औद्योगिक क्रांति परस्पर वैश्विक मूल्य श्रृंखला बनाने के लिए उद्योगों में भौतिक और डिजिटल दुनिया को एक साथ ला रही है। शक्तिशाली तकनीक, अविश्वसनीय कनेक्टिविटी और असीमित जानकारी हमारी उंगलियों पर उपलब्ध है। दुनिया भर के कारोबारी नेता इस पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा बनने के लिए कमर कस रहे हैं। कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कब या कहाँ बने थे, या उन्हें किसने बनाया था, सभी प्रौद्योगिकियों के राजनीतिक निहितार्थ हैं क्योंकि प्रौद्योगिकियाँ हमारे समाज को अंतर्राष्ट्रीय और आकस्मिक तरीकों से आकार देती हैं। जिस तरह से हम राजनीतिक जानकारी प्राप्त करते हैं वह लंबे समय से लोकतंत्र की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। समाचार मीडिया के माध्यम से, मित्रों या सहकर्मियों से, या स्वयं राजनेताओं से संचार, हमें यह सोचने में मदद करता है कि दिन के महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दे क्या हैं और हम उनके बारे में कैसे सोचते हैं। डिजिटल मीडिया व्यक्तिगत नागरिकों के राजनीतिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है क्योंकि दुनिया भर में लोगों की बढ़ती संख्या संचार के लिए डिजिटल मीडिया तकनीकों का उपयोग करती है। हालाँकि, सोशल मीडिया राजनीति के प्रभाव के प्रमुख क्षेत्रों में से एक बन गया है, जहाँ लाखों उपयोगकर्ता राजनेताओं की नीतियों और बयानों के बारे में जानने में सक्षम हैं, राजनीतिक नेताओं के साथ बातचीत करते हैं, संगठित होते हैं और राजनीतिक मामलों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के निरंतर विकास का वैश्विक से लेकर क्षेत्रीय, मतपत्र से लेकर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन, पारंपरिक से लेकर डिजिटल प्रशासन और कई अन्य तक, राजनीति के प्रत्येक पहलू पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा है। इसने भारतीय चुनाव और अभियान प्रणाली के चरित्र को बदल दिया है क्योंकि इसमें कई नई चीजें जोड़ी गई हैं

- **तकनीक के दौर में राजनीति को समझना**

दुनिया भर की प्राचीन सभ्यताओं में राजनीति की जड़ें पाई जाती हैं। प्रसिद्ध प्राचीन राजनीतिक दार्शनिक प्लेटो, अरस्तू और कौटिल्य ने राजनीति के विकास में बहुत योगदान दिया है। हालांकि, जब

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 04 | July - September 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Double Blind Peer Reviewed

दुनिया मध्यकालीन युग में प्रवेश कर चुकी थी, जहां धर्म ने एक केंद्रीय स्थान पर कब्जा कर लिया था, राजनीति विज्ञान के अध्ययन ने अपना वैज्ञानिक स्वभाव खो दिया था। फिर भी, औद्योगिक और गौरवशाली क्रांतियों के साथ आधुनिक युग की शुरुआत ने लोगों के दृष्टिकोण और पहलुओं को बदल दिया है और राजनीति को दूसरे स्तर पर पहुंचा दिया है। प्रौद्योगिकी और डिजिटल सुविधाओं के तेजी से विस्तार ने इसकी पारंपरिक राजनीति, राजनीतिक व्यवहार और अभियान के माहौल के चरित्र को बदल दिया है। प्रौद्योगिकी और नए नवाचारों की उपलब्धता और अपनाने के साथ राजनीति की पूरी परिभाषाएं बदल गई हैं। राजनीतिक विरोध से लेकर लोगों के व्यवहार तक, नीति निर्माण से लेकर नीति कार्यान्वयन तक, राजनीति का हर पहलू बदल रहा है और राज्य तंत्र के लिए चुनौती बन रहा है क्योंकि राजनीतिक विरोध अधिक तूफानी, अप्रत्याशित हो गया है और समाज शासन करना कठिन हो गया है।

- **प्रौद्योगिकी और राजनीति:**

एक सिंहावलोकन प्रौद्योगिकी और राजनीति के बीच एक अप्रत्यक्ष संबंध मौजूद है क्योंकि दोनों मानव व्यवहार और सामाजिक परिवेश से संबंधित हैं। परंपरागत रूप से, राजनीति मानव व्यवहार और किसी अन्य सामाजिक मूल्यों और मानदंडों से जुड़ी नहीं थी। हालांकि, राजनीति के क्षेत्र में सामाजिक प्रवाह और व्यवहारिक क्रांति के कारण प्रौद्योगिकी और राजनीति के बीच आपसी सहयोग मौजूद है

- **शस्त्रीकरण प्रौद्योगिकी:**

डिजिटल युग में राजनीतिक अभियान जिस बिंदु पर भारत चुनावों के लिए पकाता है, इसका तात्पर्य एक गंभीर व्यवसाय से है, लड़ाई जारी है और उस पर करोड़ों रुपये खर्च किए जाते हैं। 1951-52 के पहले आम चुनाव के बाद से प्रचार में फैंसी स्लोगन के इस्तेमाल का इतिहास गवाह रहा है। राजनीतिक दलों की वाणी में विश्वास होता है, जो छपे हुए शब्दों की तुलना में अधिक शक्तिशाली होता है क्योंकि यह पेड़ की जड़ों को छूने का सबसे आसान तरीका है; मतलब वोटरों को रिझाना राजनीतिक अभियान समकालीन भारतीय राजनीति के महत्वपूर्ण हिस्सों में से एक है जहां राजनीति ने राजनीतिक लाभ हासिल करने के लिए प्रौद्योगिकी के शस्त्रीकरण को देखा है। प्रौद्योगिकी और नवाचारों के क्षेत्र में तेजी से विकास ने राजनीति की प्रकृति और उद्देश्यों को बदल दिया है। पहले के समय में, राजनेताओं ने जनता के बीच अपनी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए मंच प्रचार और अन्य साधनों पर अधिक जोर दिया। लेकिन, डिजिटल युग में प्रवेश करने के बाद, सिरों तक पहुँचने के साधन बदल गए हैं क्योंकि वे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अधिक निर्भर हो गए हैं। सोशल मीडिया के क्षेत्र में नवीनतम नवाचारों ने राजनीति की प्रकृति को पूरी तरह से बदल दिया है; मुख्य रूप से राजनीतिक अभियान। समकालीन डिजिटल युग में, प्रत्येक राजनेता ने राजनीतिक वातावरण का आह्वान करने के लिए YouTube, Facebook, WhatsApp, Twitter, आदि जैसे सोशल मीडिया पर कब्जा करने और उसका उपयोग करने का प्रयास किया है। इस डिजिटल युग में, इंटरनेट और प्रौद्योगिकी जनता को हेरफेर करने का एक साधन बन गया है क्योंकि राष्ट्र हेरफेर की बढ़ती राजनीति का साक्षी है। जोड़-तोड़ की राजनीति राजनीतिक चेतना और व्यवहार के एक अंतर्निहित प्रबंधन

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 04 | July - September 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Double Blind Peer Reviewed

को दर्शाती है, जो उन्हें हेरफेर के लिए एक वैध चिंता के आलोक में कार्य करने के लिए मजबूर करती है। हालांकि, Erich Fromm का दावा है, "राजनीतिक हेरफेर एक व्यक्ति को दुनिया की पूरी तस्वीर बनाने की क्षमता से वंचित करता है, संबंधित तथ्यों के एक सार मोज़ेक के साथ बदल देता है" । हेरफेर के खेल में; सहानुभूति, गणना शब्द, लेबलिंग और समझौता सामग्री का उपयोग उम्मीदवारों द्वारा प्रचार के हिस्से के रूप में किया जाता है। प्रमुख अमेरिकी राजनीतिक वैज्ञानिक हेरोल्ड लासवेल, 'वैज्ञानिक दिशा' के वास्तुकार का दावा है कि कैसे प्रचार में शब्द महत्वपूर्ण रूप से खेलता है और कैसे गणनात्मक शब्दों का उपयोग 'सही अर्थ को स्थानांतरित करने और राजनीतिक मिथक बनाने के लिए' किया जाता है । हालाँकि, समकालीन भारतीय राजनीतिक संस्कृति में, राजनीतिक मिथकों का निर्माण और प्रमुख मुद्दों में हेरफेर करना एक प्रमुख चिंता का विषय है जहाँ राजनेता चुनावी धोखाधड़ी में लिप्त होते हैं और दूसरों के सपनों को रौंद कर अपने लक्ष्य को पूरा करते हैं। प्रौद्योगिकी का उपयोग राजनीतिक मिथक बनाने, राजनीतिक लक्ष्यों को पूरा करने और सस्ती कीमत पर अपने राजनीतिक एजेंडे को प्रकाशित करने के लिए एक हथियार के रूप में किया जाता है। अब, राजनेताओं को घर-घर जाने या किसी मंच पर प्रचार करने की ज़रूरत नहीं है; केवल अपने स्थान से ही वे सब कुछ प्रबंधित कर सकते हैं। इसलिए, हाउसली का दावा है, "चाहे हम इसे स्वीकार करें या नहीं, अधिकांश राजनीतिक दौड़ में प्रौद्योगिकी एक निर्णायक कारक है। प्रौद्योगिकी के माध्यम से, राजनेता धन का उपयोग करने में सक्षम होते हैं, राजनीतिक पंडित प्राप्त करते हैं, और प्रचार पर कम खर्च करते हैं और अपनी उम्मीदवारी को आगे बढ़ाते हैं । नवीनतम नवाचारों और प्रौद्योगिकी के उपयोग से, विशेष रूप से तकनीकी उपकरणों के इतने सुलभ और असीम होने के कारण राजनीतिक प्रचार आसान स्टंट बन गया है।

जनता की राय: तकनीक कैसे काम करती है? जनता की राय को राजनीति की एक और महत्वपूर्ण अवधारणा माना जा सकता है और ज्ञानोदय युग (पामर, 1936) के उदार लोकतांत्रिक सिद्धांतों में निशान पाया जा सकता है। जनता की राय एक साथ लोकतंत्र के साथ विकसित हुई और समकालीन युग में राजनीति के अनिवार्य पहलुओं में से एक बन गई। राजनीतिक-आर्थिक शक्ति के उदय में तथा लोकतंत्र को सुदृढ़ करने में जनमत की अत्यंत आवश्यक भूमिका रही है। डिजिटलाइजेशन और इंटरनेटाइजेशन के आगमन से पहले, जनमत का निर्माण एक कठिन कार्य था। लेकिन प्रौद्योगिकी और संचार में नवीनतम नवाचारों के बाद इसने गति प्राप्त की है और एक नया आकार ले लिया है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास और उपयोग ने राजनीति के क्षेत्र में सब कुछ बदल दिया है, ठीक असंरचित से संरचित, अभिजात वर्ग से सहभागी लोकतंत्र तक। यह अवसरों के द्वार खोलता है जिसके द्वारा लोग उनका उपयोग अपनी बेहतरी के लिए कर सकते हैं। आईसीटी की वृद्धि लोगों के लिए 'शिकायत निवारण' की प्रक्रिया को आसान बनाती है क्योंकि यह उनके जीवन में व्यापक परिवर्तन लाती है और सार्वजनिक राय बनाने में मदद करती है। संचार के क्षेत्र में नवीन प्रौद्योगिकी और क्रांति ने लोगों की स्थिरता को बढ़ावा दिया है, विस्तार कार्यकर्ताओं पर निर्भरता को कम किया है क्योंकि लोग ज्यादातर सार्वजनिक नीतियों और अन्य सरकारी सूचनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 04 | July - September 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Double Blind Peer Reviewed

विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी कर्मियों पर निर्भर हैं। राजनीति और प्रौद्योगिकी के बीच अंतर्संबंध व्यापक, सामयिक और अद्यतन जानकारी प्रदान करके ठोस निर्णय लेने की प्रक्रिया में सहायता करता है। सामुदायिक समस्याओं को अद्यतन करने और हल करने के लिए सूचना और संचार आवश्यक हैं क्योंकि यह त्वरित प्रतिक्रिया प्रणाली की सुविधा और त्वरित विश्लेषण और निर्णय लेने के द्वारा लोगों को सरकारी प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित करता है।

भारत की स्थिति का मूल्यांकन

- भारत जैसे देश में विज्ञान की भूमिका क्या है, इसका कोई सरल-सा उत्तर नहीं है। हालाँकि, एक ऐसा विकासशील देश, जो गरीबी और विकास की चुनौतियों के बीच जूझ रहा हो- उसके लिये विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवीकरण की व्यापक और सुविचारित नीति का सबसे बड़ा उद्देश्य त्वरित, सतत् और समग्र विकास के राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोग देना होना चाहिये|
- भारत, जहाँ ज्ञान और आविष्कारों की एक विकसित परंपरा विद्यमान रही, वहाँ विगत कुछ दशकों से विज्ञान जगत में भारत की स्थिति अपेक्षाकृत नीचे चली गई है और चीन जैसे देश ऊपर आ गए हैं।
- अब स्थिति बदल रही है, लेकिन भारत ने जो कुछ भी प्राप्त किया है, उससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता। भारतीय विज्ञान की छवि बदलने के लिये बहुत कुछ किया जाना बाकी है।
- जहाँ तक संसाधनों की बात है, भारत में सकल घरेलू उत्पाद का जो थोड़ा-सा ही हिस्सा अनुसंधान एवं विकास पर खर्च होता है।
- सरकारी-निजी भागीदारी को बढ़ाना होगा तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थाओं और उद्योगों के बीच आदान-प्रदान में वृद्धि करनी होगी।
- भारतीय परिस्थितियों में निजी अनुसंधान और विकास में निवेश को प्रोत्साहित करने के उपाय करने होंगे। अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ भी सहयोग का विस्तार करना होगा।
- इस समय सरकारी सहायता प्राप्त अनुसंधान और विकास कार्य मुख्य रूप से बुनियादी अनुसंधान के लियेकिये जा रहे हैं, न कि प्रायोगिक अनुसंधान के लिये।
- वस्तुतः प्रायोगिक अनुसंधान के क्षेत्र में उद्योगों से निवेश को आकर्षित करना आसान है और इसके लिये हमें अनुकूल नियम बनाने होंगे और अनुसंधान एवं विकास में सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देना होगा।
- अनुसंधान से नया ज्ञान प्राप्त होता है, लेकिन इस नए ज्ञान का उपयोग सामाजिक लाभ हेतु करने के लिये हमें नई विधियों की आवश्यकता है।
- खाद्य, ऊर्जा और जल सुरक्षा की समस्याओं के सर्वसाधारण तथा सर्वमान्य हल ढूँढ़ना अनुसंधान का उद्देश्य होना चाहिये।
- विज्ञान से हमें यह समझने में मदद मिलनी चाहिये कि हम सतत् विकास और हरित विकास की धारणा को मूर्त रूप कैसे दें।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 04 | July - September 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Double Blind Peer Reviewed

- विज्ञान को हमारी सोच को बदलने में मददगार होना चाहिये, ताकि हम अपने संसाधनों को अधिक उपयोगी कार्य में लगा सकें।

निष्कर्ष

जब हम प्रौद्योगिकी के बारे में बात करते हैं तो यह एक तकनीकी विषय नहीं है, यह केवल प्रौद्योगिकी के बारे में नहीं है; वास्तव में, यह इस बारे में है कि प्रौद्योगिकी सामाजिक-आर्थिक प्रणाली को कैसे आकार दे रही है और फिर से आकार दे रही है, जहां हम रह रहे हैं और इसका सरकार, भू-राजनीति और भविष्य की आर्थिक व्यवस्था को आकार देने में बहुत निहितार्थ है और स्पष्ट रूप से लोकतंत्र उसी का हिस्सा है। समकालीन दुनिया में, लोकतंत्र को पुनर्जीवित करने, सरकार के लोकतांत्रिक स्वरूप पर लोगों की खोई हुई आशा को बहाल करने और इसे भागीदारी में बदलने के लिए आग्रह किया जाता है, जहां लोगों को उनके अधिकारों और निर्णयों के लिए सही मूल्य और सम्मान मिलेगा। एक उन्नत और लोकप्रिय राष्ट्र बनाने में, प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि विभिन्न तकनीकी क्षेत्र लोगों के जीवन को आसान और खुशहाल बनाने के लिए काम कर रहे हैं। कुछ विश्लेषकों का तर्क है कि डिजिटल लोकतंत्र या फेसबुक लोकतंत्र मौजूद नहीं है; बल्कि यह एक मिथक है क्योंकि यह केवल डिजिटल नहीं है। इसलिए, हमें हमेशा प्रौद्योगिकी और लोकतंत्र को मिलाने और प्रतिनिधि लोकतंत्र के एक मिश्रित रूप का अभ्यास करने की आवश्यकता है। प्रौद्योगिकी लोकतंत्र के लिए कोई समस्या या संकट नहीं है, बल्कि प्रौद्योगिकी पर शक्ति का संकेन्द्रण, नवाचारों और प्रौद्योगिकी का शस्त्रीकरण लोकतंत्र को संकट की स्थिति की ओर धकेलता है। इसलिए, प्रौद्योगिकी के प्रभावी और कुशल उपयोग के लिए कुछ सख्त नियम आवश्यक हैं; ताकि प्रौद्योगिकी का उपयोग हेरफेर और राजनीतिक प्रचार के साधन के रूप में नहीं, बल्कि सरकार में जवाबदेही और पारदर्शिता बढ़ाने के साधन के रूप में किया जा सके। अंततः, यह योग किया जा सकता है कि 'प्रौद्योगिकी संचालित राजनीति' या 'राजनीतिक रूप से संचालित प्रौद्योगिकी' अभी भी उत्तर देने के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न है; लेकिन दोनों का संयोजन समय की मांग है। 'किसने किसको भगाया' इतना महत्वपूर्ण नहीं है; समाज की भलाई और भलाई के लिए राजनीति और प्रौद्योगिकी को बनाना महत्वपूर्ण है

सन्दर्भ

1. अक्रिवोपोलू, सी. (2013)। डिजिटल लोकतंत्र और शासन और राजनीति पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव: नई वैश्वीकृत प्रथाएँ: नई वैश्वीकृत प्रथाएँ। आईजीआई ग्लोबल।
2. बेलीएव, ए। (2017)। शून्य में कूदो। यूक्रेन: Strelbytskyy मल्टीमीडिया प्रकाशन।
3. आर्थिक और सामाजिक मामलों का विभाग। (2020)। विश्व सामाजिक रिपोर्ट 2020: तेजी से बदलती दुनिया में असमानता। संयुक्त राष्ट्र।

4. एरियल कास्टनर, "7 व्यूज़ ऑन हाउ टेक्नोलॉजी विल शेप जियोपॉलिटिक्स," वर्ल्ड इकोनॉमिक फ़ोरम, https://www.weforum.org/agenda/2021/04/seven-business-leaders-on-how-technology-will-shape- भूराजनीति/।
5. लुसी फिशर, "डाउनिंग स्ट्रीट प्लान्स न्यू 5जी क्लब ऑफ डेमोक्रेसीज," द टाइम्स, 29 मई, 2020, https://www.thetimes.co.uk/article/downing-street-plans-new-5g-club -लोकतंत्र-bfnd5wj57.

6. फैक्ट शीट: क्वाड लीडर्स समिट, व्हाइट हाउस, https://www.whitehouse.gov/briefing-room/statements-releases/2021/09/24/fact-sheet-quad-leaders-summit/।
7. जेरेड कोहेन और रिचर्ड फॉनटेन, "यूनाइटिंग द टेक्नो-डेमोक्रेसीज: हाउ टू बिल्ड डिजिटल सहयोग, "विदेश मामले 99, नहीं। 6, (2020): 112-122।